पाठ 19. घमंडी कुआँ

पाठ का उद्देश्य
प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को घमंड न करने की सीख देना है। इस पाठ द्वारा बच्चों में मिल-बाँटकर चीज़ों के उपयोग की आदत का विकास होगा।

पाठ का सारांश
पीपल के पेड़ के नीचे एक कुआँ था। उस कुएँ का पानी बहुत शीतल था। राहगीर पीपल की छाँव में आराम करते और कुएँ का पानी पीकर जाते। एक बार दो यात्रियों की बातें सुनकर कुएँ को अपने ऊपर घमंड हो जाता है। वह सोचने लगता है कि कहीं मेरा पानी खत्म न हो जाए। वह दोनों यात्रियों की बालटियाँ कुएँ में खींच लेता है। यात्रियों के जाने के बाद पीपल ने कुएँ को समझाया परंतु उसपर कोई असर नहीं पड़ा। कुएँ के प्रतिदिन के इस व्यवहार से लोगों को लगने लगा कि उसमें कोई भूत रहता है। एक बार तेज़ आँधी आने पर ढेर सारे पत्ते टूटकर कुएँ के अंदर चले गए। उन्हें निकालने वाला कोई न था। पत्ते सड़ने लगे और बदबू फैलने लगी। कुएँ को अब अपनी करनी पर पछतावा हुआ। एक बार एक सेठ धन कमाकर उधर से लौट रहा था। जब उसने कुएँ की यह हालत देखी तो कई मज़दूर बुलाकर कुएँ की सफ़ाई करवाई। कुएँ का पानी फिर से मीठा और शीतल हो गया। अब वह खुश रहता और पीपल से बातें भी करता। कुआँ समझ गया था कि घमंड करने का फल कभी अच्छा नहीं होता।

अध्यापन संकेत
पाठ वाचन से पूर्व बच्चों से पूछें, क्या वे वस्तुओं को भाई-बहन के साथ बाँटना पसंद करते हैं। पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों से पूछें तथा समझाएँ–

- तुम्हें यह कहानी कैसी लगी। इस कहानी को पढ़कर तुमने क्या सीखा।
- समझाएँ, घमंड करना गलत बात होती है, हमें मिलजुलकर रहना चाहिए।
- अपनी गलती को स्वीकार करना चाहिए।
- संयुक्ताक्षरों का अभ्यास करवाएँ।
- बच्चों को समझाएँ कि भूत-प्रेत जैसी कोई चीज़ नहीं होती इसलिए इनसे डरना नहीं चाहिए।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।